B. A. Part - I
Economics Honours
Paper - I
Micro Economics

Munmun Choudhary
Asst. prof.
Department of Economics
A. S. College
Bikramganj

Topic :- अर्थशास्त्र का क्षेत्र
(Scope of Economics)

अर्थशास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री तथा अर्थशास्त्र की प्रकृति क्या है का अध्ययन किया जाता है।

अर्थशास्त्र की विषय सामग्री
(Subject-matter of Economics)

सामान्यत कहा जाता है कि अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री के अन्तर्गत उन सभी आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जो असीमित आवश्यकताओं तथा सीमित साधनों की परिधि में की जाती है। आर्थिक क्रियाओं के आधार पर अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री को पाँच भागों में बाँटा जाता है:-

(1) उपभोग (consumption):- अर्थशास्त्र का वह भाग, जिसमें आवश्यकताओं और इससे प्राप्त होने वाली सन्तुष्टि का अध्ययन किया जाता है, उपभोग (consumption) कहलाता है।

Scanned by TapScanner

इसके अन्तर्गत मानवीय आवश्यकताओं की उत्पत्ति, प्रकृति, तुष्टिगुण तथा इससे संबंधित नियमों, जैसे, - क्रमागत तुष्टिगुण ह्रास नियम, समसीमान्त तुष्टिगुण नियम आदि का अध्ययन किया जाता है।

(2) उत्पादन (Production) :- आवश्यकताओं की पूर्ति वस्तुओं (Goods) तथा सेवाओं (Services) से होती है। अब प्रश्न यह है कि ये वस्तुएँ तथा सेवाएँ कहाँ से आती है। मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इनका उत्पादन (Production) करना पड़ता है। अतः उत्पादन अर्थशास्त्र का दूसरा प्रधान क्षेत्र या विषय-सामग्री है। इसके अन्तर्गत उत्पादन के विभिन्न साधन अर्थात, भूमि (Land), श्रम (Labour), पूँजी (Capital), साहस तथा संगठन (Courage and Organization) का, उनके लक्षणों का, उनकी क्षमता में वृद्धि करने के उपायों का, उत्पत्ति के नियमों का आदि का अध्ययन किया जाता है।

(3) विनिमय (Exchange) :- विनिमय वह क्रिया है जिसका सम्बन्ध किसी वस्तु या उत्पादन के साधन के क्रय-विक्रय से है

Scanned by TapScanner

इनका क्रय-विक्रय या विनिमय का मुख्य साधन मुद्रा है। इस क्रिया को कीमत-निर्धारण (Price Determination) भी कहा जाता है। विनिमय (Exchange) के अन्तर्गत बाजार दशाओं में वस्तु कीमत निर्धारण का अध्ययन किया जाता है।

(4) वितरण (Distribution) :- उत्पादन, उत्पत्ति के विभिन्न साधनों की सामूहिक प्रयत्न का परिणाम होता है। उत्पादन के विभिन्न साधनों के प्रयत्नों के पुरस्कार का निर्धारण एंव उसका बँटवारा ही वितरण (Distribution) का अध्ययन है। सैलिगमैन के अनुसार, "कुल उत्पादन को उत्पत्ति के विभिन्न साधनों में कैसे बाँटा (Distribute) जाये, यही वितरण की समस्या है।"

(5) राजस्व (Revenue) :- आधुनिक समय में राजस्व अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री का एक महत्वपूर्ण विभाग बन चुका है। लोक व्यय, लोक आय, लोक ऋण, वित्तीय प्रशासन आदि का अध्ययन राजस्व के अन्तर्गत किया जाता है।

Scanned by TapScanner